हरियाणा में मिश्रित शिक्षण को विद्यालयी शिक्षा में समावेश में नेतृत्व की भूमिका

पर

एक मॉड्यूल

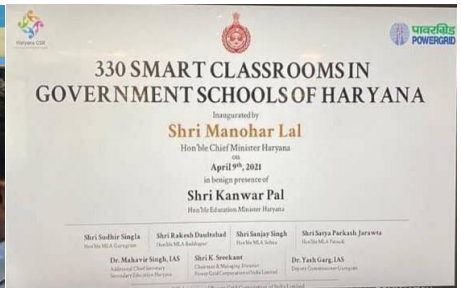

National Centre for School Leadership

विद्यालय नेतृत्व अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा

गुरुग्राम – 122001

School Leadership Academy

***State Council of Educational Research & Training, Haryana,*Gurugram**

122001

हरियाणा में मिश्रित शिक्षण को विद्यालयी शिक्षा में समावेश में नेतृत्व की भूमिका

विगत कुछ वर्षों पूर्व तक हरियाणा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया परम्परागत रूप से संचालित थी। अध्यापक परम्परागत रूप से किताबों के माध्यम से विद्यार्थी को ज्ञान प्रदान करते थे । विद्यार्थियों के पास भी अध्यापकों के अतिरिक्त ज्ञान प्राप्ति का कोई अन्य साधन नही होता था। लेकिन कोविड वायरस ने शिक्षा जगत को सबसे बडा आघात पहुंचाया। या यू कहें कि एक वायरस ने शिक्षा जगत को वास्तविक आईना दिखाया तो गलत नहीं होगा। ऐसे समय मे जब सभी को लम्बे समय तक अपने घरों मे रहने को विवश होना पडा, तब शिक्षा व्यवस्था मानो ठप्प ही हो गई थी। लेकिन कहा जाता है ना – जहां चाह, वहां राह। कोरोना काल मे हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था में परम्परागत शैली से उपर उठकर एक नया सकारात्मक परिवर्तन हुआ औद उस परिवर्तन का नाम है मिश्रित शिक्षण। एक ऐसी शिक्षण प्रक्रिया जिसमें परम्परागत तरीके के साथ साथ नवीन आधुनिक तकनीक के माध्यम से अथवा आनलाईन विद्यार्थियों को शिक्षित किया जा सकें। उस समय हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था में मिश्रित शिक्षण का समावेश हुआ। वर्तमान समय मे प्रदेश के कक्षाकक्षों मे मिश्रित शिक्षण प्रक्रिया को अपनाने पर बल दिया जा रहा है। इसमे विद्यालय नेतृत्व कर्ता की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूण है जिसके बारे मे हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

कोविड से पूर्व विद्यालयी शिक्षा की स्थिति

साल 2019 में कोविड नाम के वायरस ने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया और भीषण तबाही मचाई। कोविड–19 महामारी विश्व स्तर पर शिक्षा व्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती साबित हुई । विद्यालयी शिक्षा भी इस महामारी से प्रभावित हुई। प्रदेश में बड़ी संख्या में छात्र और सीखने वाला समुदाय है, जो ज्यादातर ग्रामीण इलाकों से संबंधित हैं जहां उन्नत तकनीकों तक आसानी से पहुंच नहीं है। इस महामारी के कारण, स्कूली शिक्षा प्रणाली को कई चुनौतियों का सामना करना पडा, विशेष रूप से वर्तमान स्थिति में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का प्रबंधन। हरियाणा प्रदेश में शिक्षण केवल परम्परागत रूप से ही किया जाता था। तकनीक का प्रयोग कक्षाकक्ष में बहुत कम किया जाता था। शैक्षिक तकनीक का उपयोग केवल शिक्षण अधिगम की सहयोग सामग्री के रूप में ही किया जाता था।

अध्यापक परम्परागत तरीके से पुस्तकों तथा अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री की सहायता से विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन करते थे और उनके जीवन को नई दिशा दिखाने का सकारात्मक प्रयास करते थे। हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षा के स्तर को उंचा उठाने के लिए किये जा रहे प्रयासों को अध्यापक कक्षाकक्ष में अमलीजामा पहनाते थे और उन्हे लागू करने के लिए भरसक प्रयत्न करते थे। कोविड से पूर्व अध्यापकों की अध्ययन और अध्यापन में तकनीक के प्रयोग को लेकर रूचि एवं दक्षता कम थी। अध्यापक अपने विषय मे तो पूर्ण रूप से दक्ष थे लेकिन तकनीकी रूप से सभी को दक्षता प्राप्त नहीं थी।

कोविड के बाद परिदृश्य

कोविड के दौरान हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को निरन्तर रखने के लिए दो वर्षों तक शिक्षा को आभासीय (आनलाईन) रूप में छात्रों तक पहुंचाने के प्रयास सरकार, विद्यालय, अध्यापकों एवं अभिभावकों द्वारा किए गए। प्रारम्भ मे व्हाटसएप पर कक्षाओं के समूह बनाकर उनतक निर्देश पहुंचाए गए। सरकार के निरन्तर निर्देशन से अध्यापकों ने छात्रों की कक्षाओं को आभासीय प्लेटफार्म (गूगल मीट/जूम) पर भी आयोजित किया।

साथ ही मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Education Resources) के अर्न्तगत चलचित्र सामग्री का निर्माण युद्धस्तर पर किया गया। अनेक यूटयूब चैनल सरकारी संस्थाओं और विद्यालयों द्वारा चलाए जाने लगे। अध्यापकों को भी प्रशिक्षण आनलाईन माध्यम से दिया जाने लगा।

स्थितियां इतनी तेजी से बदली कि आनलाईन शिक्षा अब शिक्षा प्रणाली में समाहित नजर आने लगी। ये विद्यार्थियों, अध्यापकों, अभिभावकों सभी के लिए सामान्य बात प्रतीत होने लगी। जिन छात्रों के पास मोबाईल जैसे संसाधन उपलब्ध नहीं थे, उनके लिए शिक्षामित्र योजना के अर्न्तगत शिक्षामित्रों का प्रबंध किया गया। एक वर्ष के संघर्ष के पश्चात ही हरियाणा सरकार ने दसवीं और बारहवीं के छात्रों को टैबलेट बांटने की घोषणा कर दी और शीघ्र ही उन्हे टैब

उपलब्ध भी करवा दिए गए। कोरोना काल के इन दो वर्षों का समय शिक्षा जगत के लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ और दशकों से शिक्षा में तकनीक के समावेशन को लेकर हो रहे संघर्ष में विजय प्राप्त होती हुई प्रतीत हुई।

इसी कडी मे सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम आज प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था की रीढ बने हुए है। प्रदेश में विद्यालय के कक्षाकक्षों मे आमूलचूल परिवर्तन हुए है। अधिकांश विद्यालयों मे डिजीटल स्मार्ट बोर्ड का प्रयोग किया जा रहा है। अध्यापक तकनीकी रूप से दक्ष हो गए है और अपनी पाठय सामग्री को स्वयं बनाकर दृश्य श्रव्य उपकरणों के माध्यम से विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे है। हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी और अध्यापक के कार्य को तकनीक के माध्यम से जोडने के लिए स्मार्ट टैब दिये जा रहे है । सभी को तकनीकी रूप से सुदृढ करने के लिए विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। आज प्रत्येक कार्य को तकनीक के साथ जोडकर कक्षाकक्ष में पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। विद्यालयी शिक्षा में परम्परागत और तकनीक के प्रयोग के साथ मिश्रित शिक्षण को समावेशित करने हेतू हरियाणा के विद्यालय सफलता प्राप्त कर रहे हैं और नए नए सफल प्रयोगों से निरन्तर आगे बढते जा रहे है।

उददेश्य

- मिश्रित शिक्षण के विद्यालयी शिक्षा में समावेशन में नेतृत्व की भूमिका।
- वर्तमान मे हरियाणा मे सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका।
- मिश्रित शिक्षण के विद्यालयी शिक्षा में समावेशन में अध्यापक की भूमिका।
- मिश्रित शिक्षण के समावेशन मे आने वाली कठिनाईयां।
- मिश्रित शिक्षण के समावेशन मे आने वाली कठिनाईयों के निवारण के लिए योजनाएं।
- मिश्रित शिक्षण के लिए उपयोगी संसाधन।
- हरियाणा में मिश्रित शिक्षा के समावेशन के सन्दर्भ में किए गए प्रयासों का परिचय कराना।

मिश्रित शिक्षण

मिश्रित शिक्षण एक अभिनव अवधारणा है जिसके अर्न्तगत कक्षाकक्ष में परम्परागत तरीके से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अतिरिक्त आईसीटी अर्थात सूचना एवं

संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक सबल बनाया जाता है। इसका प्रमुख उददेश्य विद्यार्थियों के ज्ञान को लम्बे समय तक स्थायी बनाने और उन्हे तकनीकी रूप से दक्ष बनाना है।

वर्तमान युग में समय तथा तकनीकी ने शिक्षण व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है। वर्तमान शिक्षा में पारंपरिक नीतियों में आधुनिक तकनीक का समावेश कर एक नया रूप प्रस्तुत कर दिया है तथा सीखने तथा सिखाने के अनेक प्रकार के विकल्पों को हमारे सम्मुख प्रस्तुत कर दिया गया है। इसी के परिणाम स्वरूप मिश्रित शिक्षण की नवीन अवधारणा हमारे समक्ष प्रस्तुत हुई है।

मिश्रित शिक्षण एक ऐसी पद्धति है, जहां हम पारंपरिक शिक्षा के साथ डिजिटल संसाधनों जैसे ऑडियो, वीडियो, स्मार्टबोर्ड, इंटरनेट, ग्राफिक, प्रोजेक्टर, सॉफ्टवेयर, वेब आदि अन्य संसाधनों का समावेशन करके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रोचक और ज्ञान को चिरस्थायी बनाने का प्रयास करते है। यह पद्धति पारंपरिक शिक्षा तथा ऑनलाइन शिक्षा पद्धति का मिश्रित रूप है।

मिश्रित शिक्षण प्रक्रिया के अर्न्तगत पारंपरिक शिक्षा के गुणों जैसे शिक्षक और विद्यार्थी का प्रत्यक्ष एक साथ एक स्थान पर न होकर भी भौतिक स्थान से कंप्यूटर तथा वेब समर्थित शिक्षा, उपकरणों के माध्यम से कक्षा का संचालन किया जा सकता है।

मिश्रित शिक्षण के सन्दर्भ मे हरियाणा की वर्तमान स्थिति

कोविड –19 ने सम्पूर्ण विश्व को बहुत प्रभावित किया। हरियाणा भी इससे अछूता नहीं रहा। छात्रों और शिक्षकों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए, राज्य सरकार और शिक्षा विभाग, हरियाणा के निर्देशानुसार राज्य के स्कूलों को पूरी तरह से बंद कर दिया गया। सभी शिक्षकों को स्कूल का काम घर से करने को कहा गया। कोविड के दौरान स्कूल बंद होने से शिक्षा व्यवस्था प्रभावित हुई। शिक्षकों का छात्रों से सीधा संपर्क टूट गया। ऐसे में छात्रों की पढ़ाई बुरी तरह प्रभावित

होने लगी। इस समय प्रदेश शिक्षा विभाग ने तकनीक के माध्यम से विद्यार्थियों तक ज्ञान पहुंचाने का प्रयास प्रारम्भ किया और सही मायनों मे यहीं से ही विद्यालयी कक्षाकक्ष मे मिश्रित शिक्षण का समावेश हुआ जो कुछ समय पहले तक केवल प्रयास एवं सुझाव की दृष्टि से देखा जाता था।

छात्रों की पढ़ाई को सुचारू रूप से जारी रखने के लिए हरियाणा शिक्षा विभाग ने छात्रों की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम शुरू किए। कोविड–19 के दौरान विद्यार्थियों को किस प्रकार अध्ययन करना चाहिए, इस पर आवश्यक प्रयास किए गए तथा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए–

घर से पढाओ अभियान

कोविड संकट के इस दौर में विद्यार्थियों ने पढ़ाई जारी रखी, इसलिए हरियाणा शिक्षा विभाग ने घर–घर शिक्षा अभियान शुरू किया। इसके लिए शिक्षकों को विद्यार्थियों का समूह बनाकर उनके साथ शिक्षण सामग्री साझा करने को कहा। सक्षम हरियाणा प्रकोष्ठ द्वारा सामग्री उपलब्ध कराई जा रही थी और छात्रों से अपेक्षा की जाती थी कि वे यह कार्य अपने घर पर करें और उस समूह के शिक्षकों से पूछें।

एजुसेट प्रोग्राम

ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में यह एक अच्छी पहल है। इसमें पाठ्यक्रम के अनुसार विभिन्न चैनलों के माध्यम से केबल और डीटीएच पर पाठ प्रसारित किए गए और छात्रों को इसे देखने के लिए प्रोत्साहित किया गया जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए। वे शिक्षक जो तकनीकी रूप से मजबूत हैं और शैक्षणिक आधार पर मजबूत हैं, वे पूरे हरियाणा से एडुसैट के लिए सामग्री तैयार कर रहे हैं। एक सप्ताह में एडुसैट से प्रति कक्षा 72 सामग्री का प्रसारण किया जा रहा है। यह एक अच्छी पहल है।

प्रतिदिन 20 कॉल

यह देखने के लिए कि प्रसारित किए जा रहे कार्यक्रमों को विद्यार्थी देख रहे हैं या नहीं, प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी, जिला प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी, उप जिला शिक्षा अधिकारी, डायट प्राचार्य, जिला परियोजना समन्वयक, प्रखंड शिक्षा अधिकारी, बीआरपी, एबीआरसी, डायट फैकल्टी एवं सभी विद्यालयों के प्रमुख प्रतिदिन 20 शिक्षकों व उनके परिजनों को बुलाने के निर्देश दिए। ये सभी

अधिकारी प्रतिदिन 20 बच्चों को फोन कर ऑनलाइन कार्यक्रम देखने के लिए प्रेरित करते थे और उनकी समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करते थे। यह विभाग का एक ऐसा कदम था जिसने छात्रों को अपनी समस्या सीधे अधिकारियों को बताने का अवसर दिया।

शिक्षा मित्र

ऑनलाइन शिक्षा के सामने मुख्य समस्या अधिकांश छात्रों के लिए स्मार्टफोन और टेलीविजन की कमी थी। इसके लिए हरियाणा शिक्षा विभाग ने शिक्षा मित्र नामक एक योजना तैयार की, जिसके तहत बच्चों के पास रहने वाला कोई भी व्यक्ति शिक्षा मित्र बन सकता है, जिसके पास स्मार्टफोन है और वह कुछ समय के लिए बच्चों की पढ़ाई में मदद कर सकता है। इस पहल की सबसे अच्छी बात यह है कि शिक्षा मित्र को कोई प्रोत्साहन नहीं देना है। वे शिक्षा को मजबूत करने में अपना योगदान देते हैं।

दीक्षा पोर्टल

ई–लर्निंग को सुचारू रूप से चलाने के लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने दीक्षा पोर्टल पर छात्रों के लिए सामग्री डालना शुरू किया। हरियाणा में, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद को दीक्षा पर सामग्री विकसित करने के लिए नोडल एजेंसी बनाया गया था। हरियाणा ने दीक्षा पोर्टल पर एक सराहनीय काम किया और तीव्र गति से सामग्री बनाना शुरू कर दिया और छात्रों को सामग्री उपलब्ध कराई।

हर हाथ मे टैब

वर्तमान मे हरियाणा के सरकारी विद्यालयों के कक्षाकक्षों में मिश्रित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का समावेश हो चुका है। आज हरियाणा के सरकारी विद्यालय के प्रत्येक अध्यापक के हाथ मे स्मार्ट टैबलेट शिक्षा विभाग द्वारा दिया जा रहा है जिसके अर्न्तगत अध्यापक उसका प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक सुचारू रूप से करने मे कर सकता है। साथ ही उसी स्मार्ट टैब में ही अध्यापक की कक्षा के सभी विद्यार्थियों का विवरण भी उपलब्ध होता है जिसके द्वारा वह यह जान सकता है कि विद्यार्थी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भाग ले रहे है अथवा नहीं। इसके अतिरिक्त कक्षा दसवीं से लेकर बारहवीं तक के सभी विद्यार्थियों को भी स्मार्ट टैब प्रदान किया गया है। इस टैबलेट मे विद्यार्थियों के लिए विभिन्न

प्रकार की शिक्षण अधिगम सामग्री उपलब्ध है जिससे विद्यार्थी कभी भी किसी भी समय डिजीटल तकनीक के माध्यम से ज्ञानार्जन कर सकता है।

कक्षाकक्ष मे डिजीटल स्मार्ट बोर्ड

प्रदेश के सरकारी विद्यालयों मे प्रदेश सरकार और शिक्षा विभाग द्वारा डिजीटल स्मार्ट बोर्ड लगाए जा रहे है। कक्षाकक्ष मे विद्यार्थियों की पढाई सुचारू रूप से हो, इसे लेकर कक्षाकक्ष मे मिश्रित शिक्षण के माध्यम से अध्ध्यन अध्यापन का कार्य किया जा रहा है।

विभिन्न प्रकार के साफटवेयर का प्रयोग

शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों के अर्न्तगत विभिन्न प्रकार के साफटवेयर का प्रयोग भी एक सराहनीय पहल है। शिक्षा विभाग द्वारा अनेक साफटवेयर की सहायता से विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफल को जांचने, बढाने और सकारात्मक दिशा मे अग्रसरित करने के प्रयास किए जा रहे है। विभाग द्वारा अध्यापकों और विद्यार्थियों को दिए जा रहे स्मार्ट टैबलेट में पीएएल साफटवेयर डाला गया है जिसकी सहायता से अध्यापक को यह पता चल जाता है कि किस विद्यार्थी ने टैबलेट का प्रयोग कितने समय तक किया है और वह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में कितना सफल हुआ है। इसके साथ ही अध्यापक द्वारा किए जा रहे प्रयोग के बारे में संबंधित विद्यालय के प्राचार्य सहित उच्चाधिकारी जान सकते है और उन्हे अधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित कर सकते है।

अवसर एप के माध्यम से अध्यापक अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों का रिकार्ड रखता है और प्रतिदिन उनकी उपस्थिति भी आनलाईन माध्यम से देख सकता है तथा रिकार्ड करता है।

ऐसे अनेक एप शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा सरकारी विद्यालयीय शिक्षण में समावेशित किए गए है जो मिश्रित शिक्षण की कक्षाकक्ष में लागू करने मे सहायक है।

कक्षाकक्ष मे शिक्षण

यदि हम वर्तमान परिदृश्य की बात करें तो वर्तमान में विद्यालयों के कक्षाकक्ष में मिश्रित शिक्षण प्रणाली का समावेश हो चुका है। कोविड के समय जिस व्यवस्था

पर सबसे अधिक प्रभाव पडा था वह थी प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था और इसका सबसे प्रमुख कारण था अध्यापकों का तकनीक में दक्ष न होना। हालांकि सभी अध्यापक अपने अपने विषय में पूर्ण रूप से दक्ष थे और परम्परागत तरीके से विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। लेकिन कोविड ने आकर एक तरह से शिक्षा व्यवस्था को पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया और सोचने पर विवश कर दिया। ऐसे मे हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया गया जिसका विवरण हम पूर्व में दे चुके है। ऐसे मे सबसे महत्वपूर्ण था अध्यापकों को तकनीकी रूप से दक्ष बनाना तथा उन्हे इस योग्य बनाना कि वे परम्परागत तरीकों के साथ साथ आधुनिक आनलाईन तकनीक तथा सूचना व प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर विद्यार्थियों को लाभान्वित कर सकें। प्रदेश सरकार और हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा इस पर कार्य करना प्रारम्भ किया गया। विभिन्न प्रकार के आनलाईन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। दीक्षा पर ई कंटेन्ट विकसित करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा अनेक अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया । यह दौर अध्यापकों, छात्रों एवं अभिभावकों के लिए प्रशिक्षण का समय था। जिस तकनीक को नया समझ इसके प्रयोग में वे सालों से झिझक रहे थे, अब वही शैक्षिक तकनीकी उनके लिए आम बात हो गई थी। इसका सकारात्मक परिणाम यह रहा कि अधिकांश अध्यापक तकनीकी रूप से स्वयं को सक्षम महसूस करने लगे। विभिन्न प्रकार के कार्य आनलाईन माध्यम से होने के कारण अध्यापक अभ्यस्त हो गए जिससे कक्षाकक्ष का वातावरण भी पूरी तरह से बदल गया। कक्षाकक्ष में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मिश्रित शिक्षण का समावेश करते हुए विभाग द्वारा अधिकांश विद्यालयों मे डिजीटल स्मार्ट बोर्ड लगवाए गए तथा सभी को टैबलेट वितरित किए गए। शिक्षकों को स्मार्ट बोर्ड का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। यही कारण है कि वर्तमान में शिक्षक डिजीटल स्मार्ट बोर्ड का विभिन्न प्रकार से उपयोग कर अपने शिक्षण को प्रभावी बना रहे है। शिक्षक डिजीटल स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से अनेक प्रकार की शिक्षण सामग्री से विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष रूप में अवगत करवा पाने मे सक्षम है।

कक्षाकक्ष मे अधिगम

वर्तमान मे कक्षाकक्ष मे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया छात्र केन्द्रित हो गई है। एक तरफ जहां अध्यापक अपने परम्परागत ज्ञान के साथ साथ निरन्तर तकनीक का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास हेतू प्रयासरत हैं वहीं दूसरी ओर विद्यार्थी भी केवल पुस्तकों से ही ज्ञान प्राप्त नहीं कर रहे है अपितु आधुनिक शिक्षण के अभिनव प्रयोगों से भी ज्ञान को दृढ कर रहे है। वर्तमान परिदृश्य में मिश्रित शिक्षण के अभिनव प्रयोगों के चलते प्रत्येक विद्यार्थी के हाथ मे स्मार्ट टैबलेट है जिसके माध्यम से वह किताबी ज्ञान के अतिरिक्त विषय से संबंधित अन्य जानकारियां भी इंटरनेट के माध्यम से कहीं से भी प्राप्त कर अपना ज्ञानवर्धन कर सकता है तथा विषय को पुष्ट कर सकता है। इसके लिए विभाग द्वारा सभी विद्यार्थियों को दो जीबी डेटा भी उपलब्ध करवाया गया है। ऐसे में कक्षाकक्ष मे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का स्वरूप भी पूर्ण रूप से बदल गया है। विद्यार्थी और अध्यापक दोनों ही कक्षाकक्ष में मिश्रित शिक्षण विधि का प्रयोग कर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को महत्वपूर्ण आयाम प्रदान कर रहे है।

विद्यालयों मे तकनीक का प्रयोग

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अतिरिक्त विद्यालयों मे भी आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जाने लगा है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस दौर मे पढने और पढाने के ढंग मे परिवर्तन आने के साथ साथ विद्यालयों की दशा और दिशा में भी अत्यधिक परिवर्तल हुआ है और सकारात्मक विकास दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान में तकनीक के माध्यम से विद्यालय अपने द्वारा किये जाने वाले विभिन्न कार्यों का प्रचार प्रसार सोशल मीडिया के माध्यम से करने लगे है जिससे उनके द्वारा किये गए कार्यो को सराहना और प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है। अनेक विद्यालय प्रवेश उत्सव के समय सोशल मीडिया का उचित प्रयोग करते है जिससे उनके विद्यालय की उपलब्धियों के बारे मे लोगों को पता चलता है और विद्यार्थियों की संख्या मे वृद्धि होती है। विभिन्न विद्यालयों मे सीसीटीवी कैमरों को लगाया जाना नवीन तकनीक का प्रयोग ही तो है। वर्तमान में सभी अध्यापकों के पास स्मार्ट टैब है। विद्यालय मुखिया तकनीक के प्रयोग से कहीं दूर रहकर भी आनलाईन बैठक कर विद्यालयी गतिविधियों की जानकारी ले सकता है। ऐसे में आधुनिक युग में विद्यालय तकनीक का प्रयोग भरपूर मात्रा में कर रहे है।

नेतृत्वकर्ता की भूमिका

विद्यालय प्रबन्धन को तकनीकी दिशा में ले जाने मे विद्यालय नेतृत्वकर्ता की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। यहां पर हम नेतृत्वकर्ता के रूप मे प्रधानाध्यापक की भूमिका के बारें मे बात करेंगे।

वास्तव में प्रधानाध्यापक को विद्यालयी शैक्षिक प्रक्रिया की धुरी माना जाता है। वह एक नेता के रूप में कार्य करता है, संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निर्देशन देता है और स्वयं शिक्षक की भूमिका का निर्वाह भी करता है। अतः उसके अनेक दायित्व है। उसकी भूमिका विविधतापूर्ण है। इस विविधतापूर्ण स्थिति में प्रधानाध्यापक को एक प्रशासक के रूप में कार्य करना होता है। यदि प्रशासक साहसी है तो वह विद्यालय संगठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

प्रधानाध्यापक की अभिनव और नवाचारों की दृष्टि से भूमिका महत्त्वपूर्ण है। कुशल नेतृत्व के द्वारा प्रधानाध्यापक को विद्यालय में अभिनव कार्य चलाने चाहिए ताकि नये अध्यापकों को विद्यालय के उद्देश्य, नीतियाँ, परम्पराएं, अनुशासन आदि के बारे में आवश्यक जानकारी मिल सके। इसके साथ ही नवनियुक्त अध्यापकों एवं कार्यरत अध्यापकों आदि सभी के लिए नवाचारों को अपनाना चाहिए और प्राचीन अप्रभावी विधियों का त्याग करके आधुनिक एवं प्रगतिशील विधियों का प्रयोग करके विद्यालय वातावरण को सजीव बनाना चाहिए। इससे विद्यालय के परिणाम अधिक उन्नतिशील हो सकेंगे और उद्देश्यों की प्राप्ति प्रभावपूर्ण ढंग से हो सकेगी।

प्रधानाध्यापक आधुनिक तकनीकी दृश्य–श्रव्य सामग्री के साथ कम्प्यूटर आदि को बढ़ावा देकर प्रेरणास्पद कार्य कर सकता है। इसके लिए प्रधानाध्यापक को स्वयं भी इस तकनीकी का ज्ञान होना चाहिए, तभी वह समाज और छात्रों को लाभान्वित कर सके। अतः संस्थागत नियोजन और समय तालिका का निर्माण कर और समय का सदुपयोग करके विद्यालय को आधुनिक तकनीकी प्रदान करने में प्रधानाध्यापक प्रशासकीय भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

मूलतः शैक्षिक क्रियाओं का प्रत्यक्ष सम्बन्ध पाठ्यक्रम से होता है। ये पाठ्यक्रम निर्धारित विषयों के कक्षागत् शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से सम्बन्धित होता है। शैक्षिक क्रियाएँ इनकी कमियों को दूर कर शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करती है। प्रधानाध्यापक अपने कुशल नेतृत्व से इन क्रियाओं का संचालन इस प्रकार करता है ताकि विद्यालय को पूर्ण लाभ की प्राप्ति हो सके। इन

नेतृत्वकर्ता की भूमिका को हम निम्न माध्यम से समझ सकते हैं –

- विद्यालय के आंकडो एवं जानकारियों का संग्रह (Cloud Database) तैयार करवाए।
- विद्यालय में उपलब्ध सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) संसाधनों को दुरूस्त कराते हुए उनके निरन्तर प्रयोग को सुनिश्चित करें।
- उपलब्ध सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) संसाधनों के उपयोग संबंधी प्रशिक्षण अध्यापकों के लिए आयोजित करें।
- आभासीय बैठकों (Online Meetings) एवं कक्षाओं के संचालन के लिए कोई एक सम्पर्क (Link) जैसे गूगल मीट, जूम आदि की खरीद का प्रस्ताव सरकार एवं प्रबंधन समिति के सामने रखें।
- विद्यालय प्रबंधन समिति (School Management Committee) को मिश्रित शिक्षण एवं संबंधित बातों की जानकारी दें।
- अभिभावकों को साईबर सेफटी से परिचित करवाएं और बच्चों द्वारा तकनीकी उपयोग के समय सावधानी के निर्देश दें।
- साईबर सेफटी से अध्यापकों एवं छात्रों के साथ–साथ समुदाय के सदस्यों को भी जागरूक करें।
- नेतृत्वकर्ता स्वयं को भी तकनीकी उपयोग में सक्षम बनाएं ।
- नेतृत्वकर्ता विद्यालय के कार्यों को समाज तक पहुंचाने के लिए वेबसाईट का निर्माण करवाएं। इसके लिए निशुल्क वेबसाईट बनाने वाली साईटों (जैसे Wordpress) का उपयोग किया जा सकता है।
- सोशल मीडिया पर भी विद्यालय की गतिविधियों को इंगित करने का प्रयास करें।
- विद्यालय का यूटयूब चैनल बनाएं।
  विद्यालय के कार्यों को प्रदर्शित और प्रचारित करने हेतु विद्यालय की ई–मैगजीन का निर्माण करवाएं जिसमे अध्यापकों और विद्यार्थियों के लेख भी शामिल हो।

प्रवृत्तियों में नामांकन अभियान, पढ़ने के लिए प्रेरित करना, वर्तनी सुधार लिखित कार्य का संशोधन, अपव्यय या अवरोधन में कमी, पुस्तकालय की उचित व्यवस्था, भृति लेख, कविता पाठ में सुधार, उच्चारण सुधार, भित्ति पत्रिका, गठित शिक्षण सुधार आदि विविध शैक्षिक प्रवृत्तियों का संचालन कर विद्यालय की प्रगति में प्रधानाध्यापक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

विद्यालय का पठन–पाठन काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि विद्यालय का प्रधानाध्यापक किस प्रकार से सभी का नेतृत्व करता है। वास्तव मे मिश्रित शिक्षण और तकनीक के प्रयोग के लिए प्रधानाध्यापक सभी को प्रेरित करता है और सभी अध्यापकों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को तकनीक के साथ जोडने के लिए प्रोत्साहित करता है। प्रधानाध्यापक विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ विद्यालय के विकास के लिए होने वाली बैठकों का आयोजन भी आनलाईन माध्यम से कर सकता है।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि नेतृत्वकर्ता को विविध भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है। वह अपने शिष्ट और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से विद्यालय के शिक्षकों का सहयोग प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार प्रधानाध्यापक जो अपने पद के कारण विद्यालय की उपयोगिता बढ़ाने के लिए उत्तरदायी है, वह समुचित पर्यवेक्षण के द्वारा समय, शक्ति और धन का समुचित उपयोग कर सकता है तथा मानवीय साधनों के अपव्यय को रोकने में सफल हो सकता है। वह शिक्षको को भी परामर्श व प्रोत्साहन दे सकता है।

संदर्भ सूची

डॉ. अश्विनी शर्मा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गुरुग्राम मे संस्कृत प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। आप संस्कृत विषय मे पीएचडी एवं शिक्षा शास्त्र मे नेट उत्तीर्ण हैं। आप राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद हरियाणा मे शैक्षिक तकनीकी विभाग मे रिसोर्स पर्सन के रूप मे कार्य करते रहे हैं। साथ ही भाषा विभाग के साथ योग विषय की पुस्तकों के लेखन तथा हिंदी एवं संस्कृत भाषा की पुस्तकों को सरलता प्रदान कर समृद्ध करने मे आपका योगदान हैं। साथ ही राज्य स्तर पर संस्कृत के कार्यों मे परिषद के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। साहित्य मे विशेष रूचि होने के कारण आपके दो साँझा काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आपको अनेक संगठनों द्वारा राज्य स्तरीय पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। आपको शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्यों के कारण शिक्षा विभाग द्वारा जिला एवं राज्य स्तर पर सम्मानित किया

निर्माणकर्त्ता

डॉ. अश्विनी शर्मा

प्राध्यापक (संस्कृत)

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गुरुग्राम

स्वरूपण एवं संपादन

डॉ. रजनी कुमारी

परामर्षदाता, SLA

SCERT, Haryana